भारत में क्षरित युरेनियम का प्रवेश संभव है

भारत डोगरा

15 नवंबर को कोटा (राजस्थान) के कबाड़ में एक बहुत भीषण विस्फोट हुआ जिसमें 3 व्यक्ति मारे गए व अनेक घायल हुए। आसपास की इमारतें भी क्षतिग्रस्त हुईं। यह विस्फोट कबाड़ में से धातु निकालने के प्रयास के दौरान हुआ।

यह हादसा अपने में अलग-थलग हादसा नहीं था अपितु कबाड़ में विस्फोट की अनेक वारदातें हाल में हो चुकी हैं। प्रायः देखा जाता है कि जो कबाड़ मध्य-पूर्व से आयात होता है उसमें ही ऐसे विस्फोटों की दुर्घटना ज़्यादा होती है।

इसके कारण समझना कठिन नहीं है। इराक युद्ध के समय यहां अमरीकी सेना ने बहुत भीषण बमबारी की थी जिसमें बहुत विनाश हुआ था। उसके बाद की घरेलू हिंसा और हमलों से भी बहुत विनाश हुआ। इस विनाश का मलबा बहुत सस्ती कीमत पर उपलब्ध होने लगा और व्यापारी इसे भारत जैसे देशों में पहुंचाने लगे क्योंकि यहां इसकी प्रोसेसिंग लुहार या छोटी इकाइयां सस्ते में कर देती हैं। पर उन्हें यह नहीं बताया जाता है कि युद्ध के समय के ऐसे विस्फोटक भी इस मलबे में छिपे हो सकते हैं और कभी भी फट सकते हैं। इन विस्फोटकों की उपस्थिति के कारण ही हाल के वर्षों में कबाड़ के कार्य व विशेषकर लोहे के कबाड़ को गलाने के कार्य में बहुत-सी दुर्घटनाएं हो रही हैं। पर इससे भी बड़े खतरे की संभावना मौजूद है जिसके बारे में अभी बहुत कम जानकारी है और जानकारी के अभाव में इसके प्रति कोई सावधानी नहीं अपनाई जा रही है।

इराक युद्ध में अमरीका ने जो बमबारी की थी, उसमें क्षरित युरेनियम का भी उपयोग हुआ था। इस बात को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अब सामान्यतः स्वीकार किया जाता है कि पूरे विश्व में क्षरित युरेनियम के हथियारों का सबसे अधिक उपयोग अभी तक इराक में ही हुआ है। इसके अतिरिक्त इनका उपयोग अफगानिस्तान व संभवतः बोस्निया में भी हुआ है, पर सर्वाधिक उपयोग इराक में हुआ, इस पर सभी एकमत हैं।

क्षरित युरेनियम युक्त हथियारों की मारक क्षमता बढ़ जाती है तथा वे बहुत मज़बूत धातु को भी भेद सकते हैं और भूमिगत बंकरों तक का नाश कर सकते हैं। इसके साथ ही इनके दीर्घकालीन परिणाम बहुत खतरनाक होते हैं। जो लोग क्षरित युरेनियम के असर की चपेट में आते हैं वे कैंसर सहित कई दीर्घकालिक बीमारियों व गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से प्रभावित हो सकते हैं। इराक के लोग, जिन्होंने इस हमले को झेला, वे तो गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त हुए ही, इसके साथ हमलावर सैनिक भी इन हथियारों के प्रतिकूल असर की चपेट में आ गए। यह एक मुख्य कारण था कि खाड़ी युद्ध से लौटने के बाद अनेक अमरीकी सैनिकों को बहुत गंभीर बीमारियों के लिए इलाज करवाना पड़ा था व उनके परिवारों में जन्म लेने वाले बच्चे कई तरह की बीमारियों व जिनेटिक समस्याओं से ग्रस्त रहे। उधर इराक में हुए सर्वेक्षण से भी यही सामने आया है कि बमबारी के क्षेत्रों के लोगों को कैंसर, विशेषकर बच्चों के कैंसर व अनेक अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं आश्चर्यजनक हद तक बुरी तरह प्रभावित कर रही हैं। सर्वेक्षण में बाल-रोगों में 300 से 400 प्रतिशत तक की वृद्धि पाई गई है।

यदि कोई इराक का टैंक इन क्षरित युरेनियम वाले बमों से क्षतिग्रस्त हुआ हो व बाद में उसके मलबे को बेचा जाए तो इस मलबे में भी क्षरित युरेनियम के अवशेष होंगे। यदि हमारे देश में बड़े पैमाने पर इस मलबे का आयात होगा तो क्षरित युरेनियम से युक्त धातु हमारे देश में दूर-दूर तक इसके खतरे से अनभिज्ञ लोगों के पास पहुंच जाएगी और वे कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

अतः सरकार को समय रहते कड़ी कार्रवाई कर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिस मलबे में विस्फोटकों की मौजूदगी की आशंका है या जो क्षरित युरेनियम से प्रभावित हो सकता है उस मलबे का भारत में आयात न किया जाए। इस तरह का जो मलबा पहले पहुंच चुका है उससे सुरक्षा की पूरी व्यवस्था भी करनी चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***